ओ सोने वाले जाग जा

किस धुन में बैठा बावरे और तू किस मद में मस्ताना है,
ओ सोने वाले जाग जा संसार मुसाफिर खाना है,
ओ सोने वाले जाग.....

क्या लेकर आया था जग में फिर क्या लेकर जायेगा,
मुठ्ठी बांधे आया जग में फिर हाँथ पसारे जाना है,
ओ सोने वाले........

कोई आज गया कोई कल गया कोई चँद रोज में जायेगा,
जिस घर से निकल गया पंछी उस घर में फिर नही आना है,
ओ सोने वाले जाग......

सुत मात पिता बांधव नारी धन धाम यहीं रह जायेगा,
यह चंद रोज की यारी है फिर अपना कौन बेगाना है,
ओ सोने वाले जाग जा.....

कह भिक्षु यती हरि नाम जपो फिर ऐसा समय न आयेगा,
पाकर कंचन सी काया को फिर हांथ मीज पछताना है,
ओ सोने वाले जाग........

। माधव शरण ।।

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/4987/title/o-sone-vale-jaag-jaa-sansar-mushaphir-khana-hai-

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |